International Journal of Applied Research 2023; 9(7): 29-32

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 8.4
IJAR 2023; 9(7): 29-32
www.allresearchjournal.com
Received: 04-03-2023
Accepted: 05-05-2023

**डॉ. मनीष कुमार त्रिपाठी**
पी–एच.डी. (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. मनीष कुमार त्रिपाठी**
पी–एच.डी. (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

# रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

## डॉ. मनीष कुमार त्रिपाठी

**सारांश**
पूर्व बाल्यावस्था में सामाजिक व्यवहार के कुछ रूप तो शैशवास्था में सीखे गए व्यवहार के अवशेष होते हैं परन्तु वे व्यवहार, जो सफल समायोजन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं, इसी समय प्रकट होते हैं, और विकसित होने लगते हैं। बाल्यावस्था के आरंभिक वर्षों में वे इतनी अच्छी तरह तो विकसित नहीं होते हैं तथापि या समय इन व्यवहारों के विकास का निर्णायक काल होता है, क्योंकि इस काल में आधारभूत सामाजिक व्यवहारों के रूप निर्धारित होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन में सम्भाव्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। इसके लिए कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों द्वारा आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य का उपयोग किया गया है। परिणाम से स्पष्ट होता है कि रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

**कूटशब्द:** रीवा संभाग, हाई स्कूल, विद्यार्थी, सामाजिक व्यवहार एवं शैक्षणिक उपलब्धि।

## 1. प्रस्तावना
सामाजिक अन्तःक्रिया कई रूपों में होती है। प्रथमतः प्रतिद्वन्द्विता का रूप है जिसमें अविभाज्य लक्ष्य को दो या दो से अधिक व्यक्ति प्राप्त करना चाहते हैं और उसके लिए संघर्ष करते हैं। दूसरा रूप सहयोग का है। इसमें सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयत्न होता है। व्यक्तिगत उपलब्धियों के लिए प्रतिद्वन्द्विता एवं सामूहिक उपलब्धि के लिए सहयोग अत्यावश्यक सामाजिक अन्तःक्रिया है। सामाजिक अन्तःक्रिया का तीसरा रूप संघर्ष है। संघर्ष में पारस्परिक विरोध होता है। समंजन चौथा रूप है। समंजन में पारस्परिक अनुकूलन निहित है। सामाजिक अन्तक्रिया का परिणाम हम दूसरों की रुचियों के साथ तादात्म्य के रूप में देखते हैं। संकेत एवं अनुकरण भी प्रभावशाली अन्तःक्रियाएँ हैं। इन अन्तःक्रियाओं से बालक का समाजीकरण होता है।
भारत की परम् पावन वसुंधरा पर अनेक महापुरूषों का समय–समय पर आविर्भाव हुआ, जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से भारत का मस्तक ऊँचा उठाया। गौतम बुद्ध, महात्मा गॉधी, महर्षि अरविन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द आदि अन्य महापुरूषों ने अपने–अपने ढंग से मानव का पथ–प्रदर्शन किया है, और जीवन को विभिन्न दिशाओं में प्रगतिशील बनाया है।
इस दिशा में स्वामी विवेकानन्द जी एक क्रान्तिकारी एवं युग द्रष्टा पुरूष के रूप में अवतरित हुए। मानव जीवन का प्रत्येक वैयक्तिक एवं सामाजिक पहलू उनसे अछूता नहीं रहा है, जिसके सम्बन्ध में विकास के सभी उपायों की मीमांसा उनके लेखों, व्याख्यानों और कार्यों में हम पाते हैं। स्वामी विवेकानन्द अपनी शिक्षा व्यवस्था से केवल तत्कालीन शिक्षा की विकृतियों को ही दूर करना नहीं चाहते थे, अपितु इसके द्वारा सम्पूर्ण दुनिया में एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे, जो समता, स्वतंत्रता, औचित्य और न्याय पर आधारित हो।

## 2. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण
किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले।

इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007)[1] ने आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, कपिल, एच.के. (1996)[2] ने सांख्यिकी के मूल तत्व, बानो रेश्मा (2011)[3] ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध. परिप्रेक्ष्य – शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, राठौर योगिता एवं संस्मति मिश्रा (2015)[4] ने ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार का तुलनात्मक अध्ययन, सिंह, अरूण कुमार, (2000)[5] ने उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं सिंह, डॉ. जय (2016)[6] ने रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है।

## 3. उद्देश्य

किसी भी शैक्षिक शोध के कुछ निश्चित बिन्दु होते हैं। जिनको प्राप्त करने की दिशा में शोध उन्मुख होता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य यह है कि शोध क्षेत्र में हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक व्यवहार का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करना भी है। प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

- रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## 4. शोध की परिकल्पनायें

1. "रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"
2. "शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

## 5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र रीवा संभाग है। इसके अन्तर्गत 4 जिले – रीवा, सतना, सीधी व सिंगरौली हैं। अतः संभाग अन्तर्गत स्थित हाई स्कूल स्तर के विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

## 6. अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

### 6.1 समष्टि व प्रतिदर्श

इस अध्ययन की समष्टि में रीवा संभाग के 04 जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों से 02 ग्रामीण व 02 शहरी विद्यालयों कुल 16 विद्यालयों से 10 बालक एवं 10 बालिकाएं कुल 320 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से शोधार्थी ने अपने शोध के लिये चुना है।

## 7. शोध उपकरण

शोधकर्त्ता ने हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु कक्षा 10 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अद्धवार्षिक परीक्षा के परिणाम व स्वनिर्मित अधिगम परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया है।

## 8. रीवा संभाग का सामान्य परिचय

रीवा नगर भारत के मानचित्र में 24 डिग्री, 32 अंश उत्तरी अक्षांश तथा 81 डिग्री 24 अंश पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1045 फिट है। इस नगर के दक्षिण–पूर्व की ओर बिछिया और दक्षिण–पश्चिम से आती हुई बीहर नदी है। रीवा नगर पूर्व रीवा रियासत की राजधानी रहा है। 4 अप्रैल 1948 को रीवा स्टेट तथा बुन्देलखण्ड की 34 रियासतों को मिलाकर विन्ध्य प्रदेश का निर्माण किया गया था। उस समय इस नगर को नवनिर्मित प्रदेश की राजधानी बनने का गौरव प्राप्त हुआ था। 01 नवम्बर 1956 को जब मध्य प्रदेश का निर्माण हुआ तब इस नगर को सम्भागीय मुख्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ।

## 9. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है –

### परिकल्पना क्रमांक– 01 के संदर्भ में

"रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

**सारणी 1:** रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

| वर्ग.अन्तराल (C-I) | 0–10 | 10–20 | 20–30 | 30–40 | 40–50 | 50–60 | 60–70 | 70–80 | 80–90 | 90–100 | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 00 | 02 | 05 | 16 | 54 | 29 | 24 | 15 | 10 | 05 | 160 |
| छात्राएं | 01 | 04 | 07 | 18 | 57 | 20 | 26 | 13 | 08 | 06 | 160 |

**सारणी 2:** सार्थक हेतु सांख्यिकीय विश्लेषण

| छात्र समूह | छात्रों की संख्या | समान्तर माध्य | मानक विचलन | अनुपात |
|---|---|---|---|---|
| छात्र | 160 | 54.69 | 16.75 | 0.96 |
| छात्राएँ | 160 | 52.81 | 18.02 | |

D.F = $(N_1-1) + (N_2-1)$
= (160-1) + (160-1)
= 159 + 159
= 318

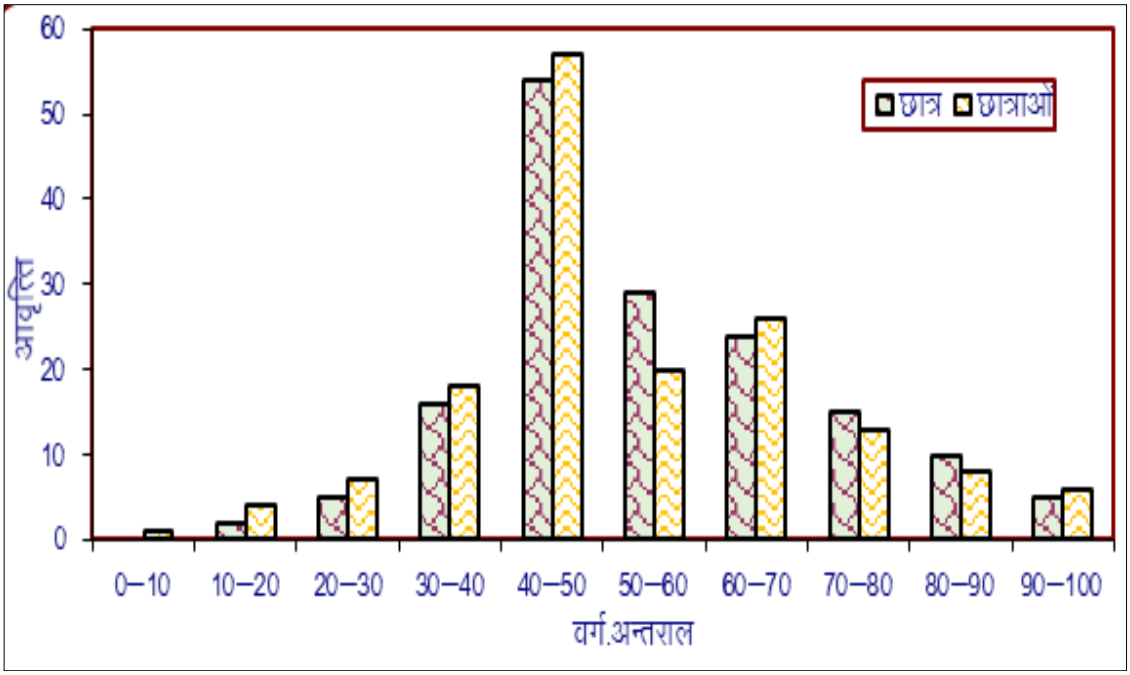


**आरेख 1:** रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

**विश्लेषण**

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी क्रमांक 1 मे संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का औसत मध्यमान 54. 69 है तथा मानक विचलन 16.75 है। इसी प्रकार छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का औसत मध्यमान 52.81 है तथा मानक विचलन 18.02 है।

रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनो समूहों की औसत उपलब्धि मे अंतर की गणना से प्राप्त 't' का मान 0.96 है।

**व्याख्या**

318 DF पर सार्थकता के लिए 't' का मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है और गणना से 't' का मान 0.96 है जो कि दोनो विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**परिकल्पना क्रमांक– 02 के संदर्भ में–**

"शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

**सारणी 2:** शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

| वर्ग.अन्तराल (C-I) | 0–10 | 10–20 | 20–30 | 30–40 | 40–50 | 50–60 | 60–70 | 70–80 | 80–90 | 90–100 | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शहरी क्षेत्र | 0 | 0 | 0 | 07 | 30 | 46 | 25 | 22 | 18 | 12 | 160 |
| ग्रामीण क्षेत्र | 01 | 03 | 05 | 14 | 50 | 35 | 20 | 16 | 10 | 06 | 160 |

**सारणी 3:** सार्थक हेतु सांख्यिकीय विश्लेषण

| छात्र समूह | छात्रों की संख्या | समान्तर माध्य | मानक विचलन | अनुपात |
|---|---|---|---|---|
| शहरी क्षेत्र | 160 | 62.94 | 16.28 | 4.32 |
| ग्रामीण क्षेत्र | 160 | 54.75 | 17.57 | |

D.F = $(N_1-1) + (N_2-1)$
= (160-1) + (160-1)
= 159 + 159
= 318

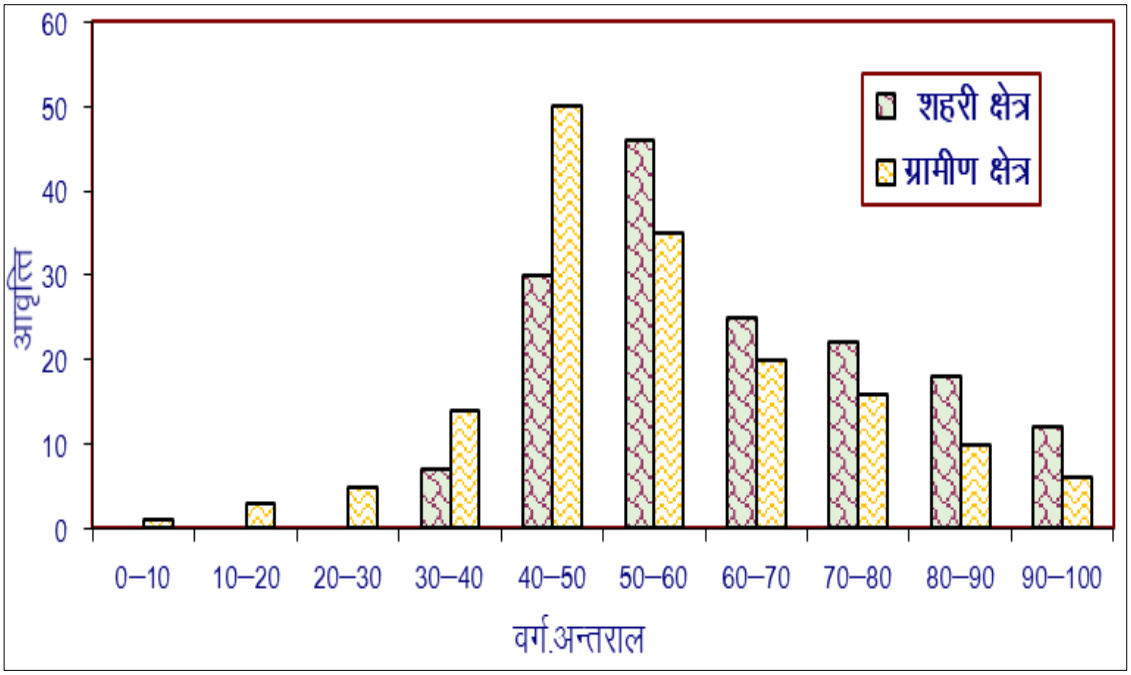


**आरेख 2:** शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

## विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी क्रमांक 3 मे संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का औसत मध्यमान 62.94 है तथा मानक विचलन 16.28 है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का औसत मध्यमान 54.75 है तथा मानक विचलन 17.57 है।

शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनो समूहों की औसत उपलब्धि मे अंतर की गणना से प्राप्त 'T' का मान 4.32 है।

## व्याख्या

318 DF पर सार्थकता के लिए 'T' का मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है और गणना से प्राप्त 't' का मान 4.32 है जो कि दोनो विश्वास स्तरों पर मानक मानों से अधिक अर्थात् सार्थक अन्तर है।

अतः शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

## निष्कर्ष

सामाजिक व्यवहार किसी के स्वयं के व्यक्तित्व और व्यक्तिगत व्यवहार के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी होती है, सामाजिक बुद्धि वाले व्यक्ति उनके बारे में पूरी तरह से जानते हैं और उनके पर्यावरण को समझते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को बेहतर जीवन प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। वे हमेशा सीखने वालों में सकारात्मक बदलाव चाहते हैं। यह परिवर्तन केवल सक्षम शिक्षण के माध्यम से लाया जा सकता है। वर्तमान में छात्र–शिक्षक अपने जीवन के क्षेत्रों में कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं और उन्हें अपने सामाजिक कौशल, समस्या सुलझाने की शैलियों को प्रबंधित करने और अच्छे शिक्षकों के प्रतीक दिखाने वाले शिक्षण योग्यता कौशल विकसित करने के लिए पर्याप्त रूप से आवश्यकता है।

## संदर्भ

1. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007): आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
2. कपिल, एच.के. (1996): सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. बानो रेश्मा (2011): माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध. परिप्रेक्ष्य – शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, 18(2), 109–121.
4. राठौर योगिता एवं संस्मति मिश्रा. ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Multidisciplinary Research and Development. 2015;2(2):434-436.
5. सिंह, अरूण कुमार, (2000) : ''उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान'' द्वितीय संस्करण पृ. 603,604, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
6. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं सिंह, डॉ. जय. रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Advanced Educational Research. 2016 September; 1(5):48-50.